02 जून 2010, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जिनवाणी का अध्ययन उलझना नहीं, सुलझना है और पण्डित बनना हीनता की नहीं, गौरव की बात है।

ह्न परमभाव प्र.नयचक्र, पृष्ठ-182

वर्ष : 33, अंक : 5 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जून (प्रथम), 2010 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

ऐतिहासिकता से सम्पन्न हुआ हीरक जयन्ती समापन समारोह

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ दिनाँक २५ मई को तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयन्ती समारोह हर्षोल्लासपूर्वक ऐतिहासिकता से मनाया गया।

इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल हीरक जयंती आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री मुकुन्दभाई खारा मुम्बई ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री नेमिषभाई शांतिलाल शाह मुम्बई तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री जयन्तीभाई दोशी मुम्बई, श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप इन्दौर, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, श्री कांतिभाई मोटानी मुम्बई, श्री धीरजजी जैन, ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, श्री सुमनभाई दोशी मुम्बई मंचासीन थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ ब्र.अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत गीत कुमारी परिणति पाटील एवं श्रीमती ज्योति गाला ने प्रस्तुत किया। डॉ. भारिल्ल का परिचय श्री मुकुन्दभाई खारा ने दिया।

इस प्रसंग पर **ब्र. हेमचन्दजी 'हेम'** ने अपने विचार व्यक्त करते हुये डॉ. साहब के व्यक्तित्त्व से जुडे अनेक संस्मरण सुनाये तथा उनकी कर्मठता और कर्तव्यनिष्ठा को रेखांकित किया।

श्रीमान् कान्तीभाई मोटाणी ने कहा कि डॉ. भारिल्ल की साहित्य साधना से गुरुदेवश्री बहुत प्रभावित रहते थे। वे डॉ. साहब की कृतियों की सदैव प्रशंसा करते रहते थे। इस बात को सप्रमाण प्रस्तुत करते हुये उन्होंने धर्म के दश लक्षण पुस्तक के संदर्भ में गुरुदेवश्री के हृदयोद्गारों को सभा के सामने पढकर सुनाया।

बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना ने डॉ. भारिल्ल के नेतृत्व में संचालित हो रहे महाविद्यालय के महत्व का वर्णन करते हुये उनसे बालिकाओं के लिये भी ऐसा एक विद्यालय खोलने का अनुरोध किया।

मुख्यअतिथि **श्री नेमिषभाई शाह** मुम्बई की ओर से **श्री मुकुन्दभाई खारा** ने डॉ. भारिल्ल के व्यक्तित्व और कर्तृत्व की प्रशंसा करते हुये गुरुदेवश्री के पुण्य प्रभावना योग में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान को रेखांकित करते हुये उनके द्वारा चलाये जा रहे तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के प्रत्येक कार्य में तन-मन-धन से सहयोग देने की भावना व्यक्त की।

साथ ही देवलाली ट्रस्ट की ओर से डॉ. साहब के सम्मान में पाँच लाख पच्चीस हजार रुपये की राशि भेंट की।

ज्ञातव्य है कि इस राशि को डॉ. भारिल्ल ने देवलाली में विक्रेता रहित सत्साहित्य केन्द्र खोलने के लिये समर्पित की।

इस अवसर पर पू. श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली की ओर से श्री नेमिषभाई शाह ने माला पहिनाकर, श्री रमेशभाई मंगलजी ने तिलक लगाकर, श्री मुकुन्दभाई खारा मुम्बई ने शॉल ओढाकर एवं श्री कांतिभाई मोटानी मुम्बई ने श्रीफल भेंटकर डॉ.भारिल्ल का सम्मान किया।

(शेष पृष्ठ 3 पर ...)

मंचासीन अतिथिगण बायें से ह्न पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, श्री अशोककुमारजी बड़जात्या इंदौर, ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, ब्र.यशपालजी जैन, श्री जयन्तिलालजी दोशी मुम्बई, श्री धीरजजी जैन नासिक, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल, श्री मुकुन्दभाई खारा, श्री नेमिषभाई शाह, श्री कांतिभाई मोटानी, श्री मुकेशजी जैन इन्दौर।

देवलाली ट्रस्ट द्वारा डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन

हीरक जयन्ती समारोह में उपस्थित जन समुदाय

आजीवन तत्त्वप्रचार हेतु प्रतिज्ञा-पत्र समर्पित करते हुये पं. शान्तिकुमारजी पाटील एवं परिषद सदस्य

सम्पादकीय – 36

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा–५३

विगत गाथा ५१ एवं ५२ में बताया गया था कि – आत्मा से सम्बद्ध ज्ञान–दर्शन भी आत्मद्रव्य से अभिन्न प्रदेश वाले होने के कारण अनन्य होने पर भी संज्ञादि व्यपदेश के कारणभूत विशेषों द्वारा पृथक्पने को प्राप्त होते हैं; परन्तु वे स्वभाव से सदैव अपृथक्पने को ही धारण करते हैं। इसप्रकार यह प्रकरण पूरा हुआ।

अब ५३वीं गाथा में कर्तृत्वगुण का व्याख्यान किया जाता है। मूल गाथा इसप्रकार है –

जीवा अणाइणिहणा संता णंता य जीवभावादो।
सब्भावदो अणंता, पंचग्गुणप्पधाणा य ।।५३।।

(हरिगीत)

है अनादि-अनन्त आतम पारिणामिक भाव से।
सादि-सान्त के भेद पड़ते उदय मिश्र विभाव से।।५३।।

आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं कि – जीव पारिणामिकभाव से अनादि–अनन्त है, उदय, उपशम एवं क्षयोपशम भावों की अपेक्षा सादि–सान्त है तथा क्षायिक भाव की अपेक्षा सादि–अनन्त है एवं जीव भाव से भी अनादि–अनन्त है।

यहाँ टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्र यह कहते हैं कि – जीव सहज चैतन्य लक्षण पारिणामिक भाव से अनादि–अनन्त हैं तथा औदयिक, औपशमिक एवं क्षायोपशमिक – इन तीन भावों से सादि–सान्त है और जीव भाव से भी अनादि अनन्त है तथा क्षायिकभाव से सादि–अनन्त है।

यहाँ गाथा में 'पंचग्गुणप्पधाणा' जो कहा – उससे तात्पर्य यह है कि – औदयिक, औपशमिक, क्षायोपशमिक, क्षायिक और पारिणामिक – इन पाँचों भावों को जीव के पंच प्रधानगुण कहा गया है।

हिन्दी कविवर हीरानन्दजी उपर्युक्त भाव को अपनी काव्य भाषा में कहते हैं कि –

(दोहा)

जीव अनादि–निधन कहै, सान्त अनन्त जु भाव।
सत्ता रूप अनन्त है, पंचमुख्यगुण भाव ।।२६९।।

(सवैया इकतीसा)

सहज चैतन्य पारिणामिक स्वभाव करि,
आदि–अन्त बिना जीव जग में बसतु है।
औदयिक औपसम छायोपसमिक भाव तातैं,
सादि–सान्त साद्यनन्त छायिक रसतु है।।
सबही उपाधि गये छायक प्रगट भाव,
साद्यनन्त बने तीकै मूढ़ता नसतु है।
सत्ता अनन्ती जीव करम पंक लीन डौले,
पंचभाव भाये सेती ग्यानी ह्वै लसतु है ।।२७०।।

(दोहा)

जीव अभव्य अनन्त हैं, तिनतैं भव्य अनन्त।
तिनतै बहुरि अभव्यसम भव्य अनन्त महंत।।२७१।।

अभव्य जीव अनन्त हैं, भव्य (मुक्ति की पात्रतावाले) उन अभव्यों से भी अनन्त गुणे अधिक हैं तथा वे जीव जो भव्य होकर भी अभव्य के समान ही हैं; क्योंकि जिसप्रकार सती विधवा स्त्री के सन्तान की पात्रता होने पर भी पति के अभाव में कभी सन्तान नहीं होगी, उसीप्रकार के दूरान्दूर भव्य योग्य निमित्तों के अभाव में कभी मुक्त नहीं होंगे – ऐसे जीव उनसे भी अनन्तगुणे हैं।

श्रीकानजीस्वामी इस गाथा के स्पष्टीकरण में कहते हैं कि –

(१) आत्मद्रव्य सहजशुद्ध चेतन पारिणामिक भावों से अनादि–अनन्त है। स्वाभाविक भाव की अपेक्षा जीव तीनों कालों में टंकोत्कीर्ण अविनाशी है।

(२) जीव सादि–सान्त भी हैं। उदय, उपशम व क्षयोपशम भावों की अपेक्षा से सादि–सान्त है। ये तीनों भाव कर्म की अपेक्षा रखते हैं। समय–समय पर जीव के परिणामों का निमित्त पाकर कर्म बँधते हैं एवं छूटते हैं। उन कर्मों की निमित्तापेक्षा वे परिणाम सादि–सान्त हैं।

(३) क्षायिकभाव सादि अनन्त हैं, पारिणामिकभाव अनादि–अनन्त हैं। सत्ता स्वरूप से जीव द्रव्य अनन्त हैं।

जैसे आत्मा का कोई कर्त्ता नहीं है, उसी प्रकार इन पाँच भावों का भी कर्त्ता नहीं है। तत्त्वार्थसूत्र में इन्हें 'स्वतत्त्व' कहे हैं। अंत में कहा है कि – विकार रूप होने की जीव की स्वयं की योग्यता है – ऐसा कहकर कर्मों पर से दृष्टि छुड़ाई है तथा अपने स्वभाव पर दृष्टि कराई है। ●

गाथा– ५४

अब प्रस्तुत गाथा में औदयिक आदि भावों के कारण सादि–सान्तपना और अनादि–अनन्तपना होने में जो विरोध प्रतीत होता है, उसका परिहार करते हैं। मूलगाथा इसप्रकार है –

एवं सदो विणासो असदो जीवस्स हवदि उप्पादो।
इदि जिणवरेहिं भणिदं अण्णोण्णविरुद्धमविरुद्धं ।।५४।।

(हरिगीत)

इस भाँति सत्–व्यय अर असत् उत्पाद होता जीव के।
लगता विरोधाभास सा पर वस्तुतः अवरुद्ध है।।54।।

आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं कि – इसप्रकार जीव के सत् का विनाश और असत् का उत्पाद होता है – ऐसा जिनवरों ने कहा है। जो कि अन्योन्य विरुद्ध होकर भी अविरुद्ध है।

आचार्य अमृतचन्द समय व्याख्या टीका में स्पष्टीकरण करते हुए कहते हैं कि – जीवों को औदयिक आदि भावों के कारण सादि–सान्तपना और अनादि–अनन्तपना होने में विरोध नहीं आता; क्योंकि वास्तव में पाँच भाव रूप से स्वयं परिणमित होने वाले जीवों के मनुष्यत्वादि औदयिकभाव की अपेक्षा सत् का विनाश होता ही है और औदयिक भाव की अपेक्षा ही देवत्वादि भाव की अपेक्षा असत् का उत्पाद भी होता ही है। ऐसा कहने से मूलतः सत् का विनाश भी नहीं और असत् का उत्पाद भी नहीं हुआ।

पूर्वोक्त गाथा १९ में कथन के साथ विरोध–सा प्रतीत होने पर भी वस्तुतः विरोध नहीं है; क्योंकि द्रव्यार्थिकनय के कथन से सत् का नाश नहीं होता; अतः सत् लक्षण वाले जीव का भी सर्वथा नाश नहीं है। यहाँ पर्यायार्थिकनय की अपेक्षा सत् का नाश व असत् का उत्पाद कहा है।

यहाँ यद्यपि जीव को भिन्न–भिन्न अपेक्षाओं से अनादि–अनन्त व सादि–सान्त कहा गया है; परन्तु ऐसा तात्पर्य ग्रहण करना चाहिए कि पर्यायार्थिकनय के विषयभूत सादि–सान्त जीव आश्रय करने योग्य नहीं; अपितु द्रव्यार्थिकनय के विषयभूत अनादि–अनन्त टंकोत्कीर्ण ज्ञायक स्वभावी आत्मा ही आश्रय करने योग्य हैं।

आचार्य जयसेन कृत टीका का भावार्थ लिखते हुए टीकाकार कहते हैं कि – जिनवाणी में दो नय कहे हैं (१) द्रव्यार्थिक (२) पर्यायार्थिक। द्रव्यार्थिकनय से वस्तु का न तो उत्पाद है और न नाश है। तथा पर्यायार्थिक नय से नाश भी है और उत्पाद भी है। जैसे कि – समुद्र नित्य–अनित्य स्वरूप है। द्रव्य की अपेक्षा तो समुद्र नित्य है और कल्लोलों की अपेक्षा उपजना–विनशना होने के कारण जल की कल्लोल अनित्य है। इसीप्रकार द्रव्य नित्य–अनित्य रूप कथंचित् प्रकार से नित्य तथा उसकी पर्यायें अनित्य जानना चाहिए।

कवि हीरानन्दजी अपनी काव्य की भाषा में कहते हैं कि –

(दोहा)

सत् विनसै उपजै असत्, जीवभाव असमान।
चहु विरोध अविरोध है, जिनवर कथन प्रमान।।२७३।।

(सवैया इकतीसा)

नहीं पंचभावौं सौं जीव परिणामें सदा,
तातैं औदयिक रूप, पर भाव नासै है।
वेदभाव असाता का ताका उतपात करै,
यामै तो विरोध भावनैक न विकासै है।।
दर्व नैन देखे से सी दर्व एकसा सुता है,
पर्यय नैन होता सा नासता सामासै है।
दर्व पर्याय दोनों नय का विलास जातैं,
ज्ञानी वस्तुतत्व पाषै मोखपास पासै है।।२७३।।

(दोहा)

दरव लखन पर्यऐ लखन, जो लखि जाते जीव।
सिवमारग सोई लखै जग में मुगत सदीव।।२७५।।

श्रीकानजीस्वामी इसके भाव को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि – भगवान के मत में दो नय कहे हैं –

(१) द्रव्यार्थिक (२) पर्यायार्थिक। द्रव्यार्थिक नय से वस्तु उपजती–विनसती नहीं है। अनादि–अनन्त एक रूप रहती है। तथा पर्यायार्थिकनय से वस्तु में उत्पाद–व्यय होता है। जैसे आत्मा कायम रहकर मनुष्यरूप से मरण देवरूप उत्पन्न होता है।

गुरुदेव के कहने का तात्पर्य यह है कि – द्रव्यापेक्षा वस्तु कायम रहकर पर्याय अपेक्षा से परिणमन शील है। इसप्रकार वस्तु अपेक्षा बिना विरुद्ध दिखने पर भी नयों की अपेक्षा अविरुद्ध है। ●

(पृष्ठ 1 का शेष ... हीरक जयन्ती)

इसी प्रसंग पर डॉ. भारिल्ल के लिये मोना (यू.एस.ए.) से प्राप्त विशेष शुभकामना सन्देश को कु.प्रज्ञा जैन ने एवं श्री अनंतभाई शेठ मुम्बई की ओर से प्राप्त शुभकामना सन्देश को पण्डित विरागजी शास्त्री ने पढकर सुनाया।

श्री टोडरमल स्नातक परिषद् के लगभग १३५ उपस्थित सदस्यों ने आजीवन तत्त्वप्रचार–प्रसार करने के लिये प्रतिज्ञा–पत्र भरकर डॉ.भारिल्ल को समर्पित किये। ज्ञातव्य है कि स्नातक परिषद के सभी सदस्यों को **निम्नांकित** प्रतिज्ञापत्र भेजा गया है, जिसे उन्होंने अपने हस्ताक्षर करके वापस भेजा है, इस प्रकार अभी तक ३६५ प्रतिज्ञा पत्र भरकर आ चुके हैं और अभी भी आने का सिलसिला चालू है। अनेक अन्य विद्वानों ने भी इस प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर कर डॉ. भारिल्ल को समर्पित किये।

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के हीरक जयन्ती वर्ष के अवसर पर

उनके शिष्यों द्वारा उन्हीं के समक्ष लिया गया तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार का

आजीवन संकल्प

इसके पश्चात् मुमुक्षु मण्डल सीमंधर जिनालय मुम्बई, अ.भा.जैन युवा फैडरेशन मुम्बई, श्री रतनचंदजी जैन (मंत्री–निसईजी ट्रस्ट, गंजबासौदा), श्री कुन्दकुन्द दि.जैन स्वाध्याय मण्डल एवं फैडरेशन नागपुर की ओर से श्री आदिनाथजी नखाते, श्री नरेशजी सिंघई एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री, श्री दि.जैन मुमुक्षु मण्डल नातेपुते से डॉ.विजयजी शास्त्री, भिण्डर से श्री सुनीलजी वक्तावत, जीतो एडमिनिस्ट्रेटिव ट्रेनिंग फाउन्डेशन की ओर से श्री धीरजजी जैन एवं श्री प्रमोदजी जैन दिल्ली, मुमुक्षु मण्डल एवं फैडरेशन जबलपुर की ओर से डॉ.नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जबलपुर, स्वान्त:सुखाय स्वाध्याय संघ सोलापुर की ओर से डॉ.हुकमचंदजी संगवे आदि ने भी डॉ.भारिल्ल का भावभीना अभिनन्दन किया।

समारोह में ब्र.हेमचंदजी हेम देवलाली, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, श्री कान्तिभाई मोटानी, ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, ब्र. रमाबेन (देवलाली महिला मण्डल), ब्र. वासंतीबेन (देवलाली महिला मण्डल) आदि ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल का स्वागत श्रीमती रमाबेन ने तिलक व माल्यार्पण करके एवं श्रीमती ज्योत्सनाबेन ने श्रीफल भेंटकर किया।

समारोह का संचालन आयोजन समिति के महामंत्री श्री अशोककुमारजी बड़जात्या इन्दौर एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने किया। आभार प्रदर्शन श्री मुकुन्दभाई खारा मुम्बई ने किया। ●

वार्षिकोत्सव पर विभिन्न प्रतियोगितायें

उदयपुर (राज.) : यहाँ हिरणमगरी से.–११ में दिनाँक १८ अप्रैल को श्री वीतराग–विज्ञान पाठशाला का वार्षिक रंगारंग समारोह देबारी पार्श्वनाथ में विभिन्न प्रतियोगिताओं के साथ संपन्न हुआ।

इस कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री राजकुमारजी भोरावत एवं मुख्य अतिथि श्री हरीशजी कोडिया थे। समारोह के प्रथम सत्र में **आध्यात्मिक क्रिकेट प्रतियोगिता** में नितिशा भोरावत की (निकलंक टीम) प्रथम रही। विभिन्न **धार्मिक चिह्नों की संख्या छांटो प्रतियोगिता** में लिपि जैन प्रथम, क्षायिक चम्पावत द्वितीय एवं तनीष जैन तृतीय स्थान पर रहे।

पाठशाला की संचालिका श्रीमती नीलम जैन ने बताया कि दूसरे सत्र में **जीव–अजीव छांटिये प्रतियोगिता** में गर्विता जैन प्रथम, कृति सिंघवी द्वितीय एवं चारुल मेहता तृतीय स्थान पर रहे। **अन्तर छांटिये प्रतियोगिता** में प्रणव शर्मा प्रथम, हर्षिल जैन द्वितीय एवं निकुल जैन तृतीय स्थान पर रहे। उल्टे–पुल्टे अक्षरों में **सही शब्द बनाओ प्रतियोगिता** में रीनल जैन ने प्रथम, लोचन बण्डी ने द्वितीय एवं चयन जैन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। चित्र देखकर **कहानी लिखो प्रतियोगिता** में दिव्यांशा जैन प्रथम, नीलेश जैन द्वितीय, नितिशा भोरावत एवं ग्रेसिम जैन तृतीय स्थान पर रहे। द्वितीय सत्र के कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री मुकेशजी मेहता एवं मुख्य अतिथि श्री नृपेन्द्रजी भदावत थे।

कार्यक्रम के मुख्य संयोजक पण्डित खेमचंदजी शास्त्री थे। संचालन श्रीमती योगिता कोडिया ने एवं आभार प्रदर्शन पण्डित प्रक्षालजी शास्त्री ने किया।

मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें

मुक्त विद्यापीठ के **द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षायें 15 से 25 जून के बीच में रखी गयी है।** सभी केन्द्रों को प्रश्नपत्र 5 जून तक भेज दिये जायेंगे। यदि 10 जून तक किसी को पेपर न मिले तो वे पं.धर्मेन्द्रजी जैन–9785643203 या पं. पीयूषजी जैन–9785643202 से संपर्क करें। प्रश्नपत्र योजना निम्नानुसार रहेगी –

द्विवर्षीय विशारद परीक्षा –

प्रथम वर्ष (उपा. कनिष्ठ) द्वितीय सेमेस्टर –

प्रथम प्रश्नपत्र : वीतराग–विज्ञान पाठमाला–भाग २
द्वितीय प्रश्नपत्र : वीतराग–विज्ञान पाठमाला–भाग ३

द्वितीय वर्ष (उपा. वरिष्ठ) द्वितीय सेमेस्टर –

प्रथम प्रश्नपत्र : तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–२
द्वितीय प्रश्नपत्र : धर्म के दशलक्षण (७० अंक) +
भक्तामर स्तोत्र (३० अंक)

त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा –

प्रथम वर्ष (शास्त्री प्रथम वर्ष) द्वितीय सेमेस्टर –

प्रथम प्रश्नपत्र : रत्नकरण्ड श्रावकाचार (१५० श्लोक)
द्वितीय प्रश्नपत्र : रामकहानी (७० अंक) +
सामान्य श्रावकाचार (३० अंक)

वेदी शुद्धि का भव्य आयोजन

जयपुर : यहाँ घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार स्थित श्री आदिनाथ दि. जैन मंदिर दीवान भधीचन्दजी में दिनांक 22 एवं 23 मई को विशाल रथयात्रा एवं वेदी शुद्धि कार्यक्रम आयोजित किया गया।

मंदिर कमेठी के अध्यक्ष डॉ. सुरेन्द्रजी दीवान ने बताया कि दिनांक 22 मई को प्रात: ध्वजारोहण श्री विमलेशजी (मारसन्स) परिवार आगरावालों के करकमलों से हुआ। तत्पश्चात् घटयात्रा पूर्वक 108 कलशों से वेदी की शुद्धि की गई, दोपहर में यागमण्डल विधान एवं सायंकाल प्रवचनोपरान्त ज्ञानवर्द्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

दिनांक 23 मई को प्रात: नित्यपूजन के उपरान्त विशाल जिनवाणी रथयात्रा निकाली गई तथा शुभ मुहूर्त में स्वर्ण कार्य की गई 13 प्राचीन वेदियों पर शताधिक जिन प्रतिमायें विराजमान की गईं।

आयोजन में दोनों दिन पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के मार्मिक प्रवचनों का लाभ उपस्थित जन समुदाय को मिला।

इस अवसर पर मंदिर परिसर में श्री आदिनाथ होम्यो चिकित्सालय (नि:शुल्क) का उद्घाटन श्रीमती सूरजदेवी एवं उनके सुपुत्र श्री प्रदीपकुमारजी पाटनी परिवार के करकमलों से हुआ।

वेदि शुद्धि एवं विधानादि के समस्त कार्य पण्डित संजीवकुमारजी गोधा एवं पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री ने सम्पन्न कराये।

मंदिर कमेठी के उपाध्यक्ष श्री धूपचन्दजी साह ने बताया कि मंदिर में भगवान सीमंधरस्वामी की चार सौ वर्ष प्राचीन (वि.सं.1663 की) प्रतिमा विराजमान है। यहाँ लकडी पर बनी स्वर्ण कार्य की गई अकृत्रिम चैत्यालय एवं समवशरण की रचना अद्वितीय है। यहाँ एक सुन्दर चैत्यवृक्ष वेदी भी निर्मित है। श्री कैलाशचन्दजी साह ने कहा कि यह ऐतिहासिक मंदिर पण्डित टोडरमलजी की कार्यस्थली रहा है, यहाँ उनके द्वारा हस्तलिखित मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ की मूल प्रति शोभायमान है। **ह्न राजकुमार साह**

औरंगाबाद में डॉ. भारिल्ल की हीरक जयंती

औरंगाबाद (महा.) : यहाँ गणेश मंगल कार्यालय सिडको में दिनाँक ९ मई को तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री मधुरकुमारजी कटके (रिटा. पुलिस उप अधीक्षक) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. रवीन्द्रजी पाण्डे, श्री गौतमचन्दजी संचेती, श्री पन्नालालजी गंगवाल, श्रीधररावजी जैन एवं गाडेकर परिवार मंचासीन थे।

मंगलाचरण श्री संजयजी राउत ने एवं डॉ. भारिल्ल का परिचय डॉ. सौ.प्रतिभा पाण्डे ने दिया।

इस अवसर पर पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम एलोरा, श्री समन्तभद्र विद्यामंदिर एलोरा, भारतीय जैन संघटना औरंगाबाद, स्वानुभव स्वाध्याय मंडल औरंगाबाद आदि लगभग २० संस्थाओं ने डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया। इसके पश्चात् लगभग ५० लोगों ने भी व्यक्तिगतरूप से डॉ. भारिल्ल का भावभीना अभिनन्दन किया। अन्त में आभार प्रदर्शन श्री नेमीचंदजी अर्पल ने किया।

सभा के पूर्व लगभग ६०० लोगों की उपस्थिति में डॉ. भारिल्ल का **अहिंसा** एवं **णमोकार महामंत्र** पर मार्मिक प्रवचन हुआ।

एक साथ 35 स्थानों पर ग्रुप शिक्षण-शिविर संपन्न

सिलवानी (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक १ से ९ मई तक श्री तारण–तरण दि.जैन समाज सिलवानी द्वारा शिक्षण–शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन दिनाँक ३० अप्रैल को श्री तारण–तरण चैत्यालय सिलवानी में हुआ।

समारोह की अध्यक्षता श्री प्रहलादकिशोरजी उदयपुरा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में पण्डित शिखरचंदजी विदिशा एवं विशिष्ट अतिथि श्री कुसुमकांतजी सागर मंचासीन थे। मंगलाचरण पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली ने तथा संचालन पण्डित समकितजी शास्त्री सिलवानी एवं पण्डित आशीषजी शास्त्री सिलवानी ने किया।

शिविर में भोपाल, रायसेन, सिलवानी, विदिशा, सागर एवं होशंगाबाद जिलों के ३५ स्थानों पर एक साथ शिविर के माध्यम से विद्वानों ने ज्ञान गंगा प्रवाहित की। जिसके अन्तर्गत **सिलवानी (तारण–तरण चैत्यालय)** में पण्डित निलयजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित पंकजजी शास्त्री हिंगोली, पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली एवं पण्डित नियमजी शास्त्री सिलवानी, **देहगाँव** में पण्डित सुमितजी ध्रुवधाम छिंदवाड़ा एवं पण्डित सनतजी बकस्वाहा, **उदयपुरा** में ब्र.सुधाबहिनजी छिंदवाड़ा एवं पण्डित वैभवजी शास्त्री डडूका, **विदिशा (किला अन्दर)** में पण्डित अभिषेकजी शास्त्री कोलारस, **विदिशा (तारण–तरण चैत्यालय)** में पण्डित भावेशजी शास्त्री उदयपुर, **गंजबासौदा** में पण्डित अशोकजी शास्त्री बकस्वाहा एवं पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री सिलवानी, **सिरोंज** में पण्डित अभिषेकजी शास्त्री दिल्ली, **ग्यारसपुर** में पण्डित रवीन्द्रजी शास्त्री बकस्वाहा, **भोपाल (चौक)** में पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित गौरवजी शास्त्री मेरठ, पण्डित दीपकजी शास्त्री भिण्ड एवं पण्डित संयमजी शास्त्री सिलवानी, **भोपाल (अशोका गार्डन)** में पण्डित तन्मयजी शास्त्री, **भोपाल (कोहेफिजा)** में पण्डित संदेशजी शास्त्री बोरालकर, **बैरसिया** में पण्डित जयेशजी शास्त्री उदयपुर एवं पण्डित मयंकजी शास्त्री अमरमऊ, **मंडीदीप** में पण्डित अभिषेकजी शास्त्री सिलवानी, **बीना** में पण्डित प्रीतमजी शास्त्री एवं पण्डित आशीषजी शास्त्री टोंक, **खुरई (पार्श्वनाथ जिनालय)** में पण्डित अभिषेकजी मंगलायतन छिंदवाड़ा, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री एवं पण्डित राहुलजी शास्त्री दमोह, **खुरई (तारण–तरण चैत्यालय)** में पण्डित सूरजजी शास्त्री मगदुम, **सागर (तारण–तरण चैत्यालय)** में पण्डित आकेशजी शास्त्री छिंदवाड़ा एवं पण्डित सुदीपजी शास्त्री ध्रुवधाम जवेरा, **सागर (परकोटा)** में पण्डित पंकजजी शास्त्री बकस्वाहा, पण्डित विकासजी शास्त्री बानपुर एवं पण्डित रॉकीजी शास्त्री बांसवाड़ा, **सागर (मकरोनिया)** में पण्डित शशांकजी शास्त्री सागर, **वनखेड़ी** में पण्डित विवेकजी शास्त्री भिण्ड, **होशंगाबाद (तारण–तरण चैत्यालय)** में ब्र.रवि भैया ललितपुर, पण्डित प्रवेशजी शास्त्री करेली एवं पण्डित सचिनजी शास्त्री भगवां, **इटारसी** में पण्डित एकत्वजी शास्त्री खनियांधाना एवं पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री दिल्ली ने महती धर्म प्रभावना की।

शिविर में तीनों समय बालकक्षा में जिनागम प्रवेश एवं लघु जैन सिद्धांत प्रवेशिका, प्रौढकक्षा में तत्त्वज्ञान पाठमाला, नयचक्र, छहढाला, तत्त्वार्थसूत्र, भक्तामर स्तोत्र, क्रमबद्धपर्याय तथा प्रवचनों में समयसार, ममलपाहुड, ज्ञानसमुच्चयसार, मालारोहण, रत्नकरण्डश्रावकाचार आदि ग्रंथों का लाभ मिला। सायंकाल भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

शिविर में लगभग 20 हजार लोगों ने लाभ लिया तथा अंतिम दिन 3460 शिविरार्थियों ने विभिन्न विषयों की परीक्षा दी।

शिविर का निरीक्षण श्री जयकुमारजी, श्री प्रजासेवकजी, श्री जयबाबूजी, संयोजक पण्डित समकितजी शास्त्री, पण्डित आशीषजी शास्त्री एवं अन्य पदाधिकारियों ने किया तथा जागृति हेतु निर्देष दिये।

शिविर में अनेक भाई–बहनों ने प्रतिदिन मंदिर जाने, स्वाध्याय करने, रात्रिभोजनत्याग, जमींकंद त्याग आदि अनेक नियम लिये।

शिविर में कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, पण्डित टोडरमल सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर एवं आचार्य अकलंक जैन न्याय महाविद्यालय बांसवाड़ा का सराहनीय सहयोग रहा।

शिविर का समापन समारोह दिनाँक ९ मई को हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ.विद्यानंदजी जैन विदिशा ने की। मुख्य अतिथि श्री मलूकचंदजी जैन विदिशा व प्रभारी प्रतिनिधि श्री सुधीरजी सहयोगी रहे। सभा का संचालन पण्डित समकितजी शास्त्री ने किया।

बुन्देलखण्ड के 13 स्थानों पर बाल संस्कार शिविर संपन्न

नौगाँव–छतरपुर (म.प्र.) : श्री १००८ आदिनाथ दि.जैन मंदिर नौगाँव के तत्त्वावधान में दिनाँक १० से १८ मई तक जैनत्व बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में युवा पीढी में धार्मिक संस्कारों के उत्थान हेतु भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों को जन–जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से लगाये गये इस शिविर में बुन्देलखण्ड की धरा पर १३ अनछुए स्थानों को चुना गया, जहाँ लगभग १५०० लोगों ने आध्यात्मिक लाभ लिया।

शिविर में पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित आशीषजी शास्त्री सिलवानी, पण्डित आशीषजी शास्त्री मडावरा, पण्डित आकाशजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित सौरभजी शास्त्री अमरमऊ, पण्डित जयेशजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित भावेशजी शास्त्री, पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, पण्डित रजितजी शास्त्री, पण्डित सनतजी शास्त्री, पण्डित शनिजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित अर्पितजी शास्त्री आदि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ समाज को मिला।

शिविर का समापन दिनाँक १८ मई को खजुराहो (धर्मशाला) में श्री शिखरचंदजी जैन (अध्यक्ष–दि.जैन अतिशय तीर्थक्षेत्र कमेटी, खजुराहो), श्री विनोदकुमारजी जैन (मंत्री), श्री शांतकुमारजी जैन (उपाध्यक्ष), श्री राकेशजी जैन एवं श्री सुनीलजी जैन इंजीनियर आदि के सानिध्य में संपन्न हुआ।

शिविर के संयोजक पण्डित मोहितजी शास्त्री एवं पण्डित राहुलजी शास्त्री थे।

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

53 तेरहवाँ प्रवचन - डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

संसारी और सिद्ध जीवत्व की अपेक्षा समान हैं; तथापि उनमें जो संसार और सिद्धपने की अपेक्षा भेद है, अन्तर है, वह तो है ही; उसको भी तो पूरी तरह उपेक्षित नहीं किया जा सकता है।

समानता और असमानता की जो अपेक्षायें हैं; उन्हें समझना भी तो अत्यन्त आवश्यक है; क्योंकि उन्हें समझे बिना भी तो भाव स्पष्ट नहीं होता।

इसप्रकार हम देखते हैं कि निश्चयनय द्वारा किये गये निरूपण का सही अर्थ न समझ पाने के कारण निश्चयाभासी गृहीत मिथ्यादृष्टि में मूलत: दो प्रकार की भूलें रह जाती हैं।

पहली तो यह कि जो मतिज्ञान-श्रुतज्ञान अभी विद्यमान है; वह उनसे तो इन्कार करता है और जो केवलज्ञान अभी नहीं है; उसके बारे में कहता है कि मैं अभी केवलज्ञानी हूँ।

दूसरी बात यह है कि मोह-राग-द्वेष वर्तमान में विद्यमान होने पर भी वह उनसे तो इन्कार करता है और पूर्ण वीतरागता अभी नहीं है, उसे विद्यमान मानता है।

निश्चयाभासी की दोनों प्रकार की मिथ्या मान्यताओं का निराकरण यहाँ अनेक प्रकार के आगम प्रमाणों और सशक्त युक्तियों से किया गया है।

पण्डित टोडरमलजी अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में लिखते हैं कि शास्त्रों में जीवों का जो केवलज्ञानस्वभाव कहा है, वह तो शक्ति अपेक्षा से किया गया कथन है; क्योंकि सभी जीवों में केवलज्ञानादिरूप होने की शक्ति है। वर्तमान व्यक्तता तो व्यक्त होने पर ही कही जाती है।

मति-श्रुतज्ञान क्षयोपशमज्ञान है, केवलज्ञान क्षायिकज्ञान है और केवलज्ञानस्वभाव अर्थात् सर्वज्ञत्वशक्ति पारिणामिकभाव है।

जब तक क्षायोपशमिकज्ञान है, तब तक क्षायिकज्ञान नहीं हो सकता और जब क्षायिकज्ञान प्रगट हो जाता है तो क्षायोपशमिकज्ञान नहीं रहता; किन्तु पारिणामिकभाव क्षायोपशमिकज्ञान और क्षायिकज्ञान दोनों के साथ रह सकता है, रहता है। यही कारण है कि संसारी जीवों को पारिणामिक-भावरूप केवलज्ञानस्वभावी कहा है, क्षायिकभावरूप केवलज्ञानस्वभावी नहीं; परन्तु निश्चयाभासी जीव मतिज्ञानादिक होने पर भी वर्तमान में स्वयं को क्षायिकभावरूप केवलज्ञानस्वभावी मान लेते हैं।

कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि आत्मा के प्रदेशों में तो केवलज्ञान विद्यमान ही है; ऊपर से कर्म का आवरण होने से प्रगट नहीं होता; दिखाई नहीं देता; परन्तु उनका ऐसा कहना ठीक नहीं है; क्योंकि यदि केवलज्ञान हो तो वज्रपटलादि के आड़े आने पर भी सब कुछ जानने में आता है, कर्मों के आड़े आने से क्या होता है ? वस्तुत: बात यह है कि क्षायोपशमिकरूप ज्ञान के समय क्षायिकभावरूप केवलज्ञान है ही नहीं।

निष्कर्ष रूप में पंडितजी लिखते हैं कि जिसप्रकार खौलते हुए गर्म पानी को शीतल स्वभाव के कारण शीतल मान कर पीने से जलने के अतिरिक्त और कुछ नहीं होगा; उसीप्रकार **केवलज्ञानस्वभाव के कारण अशुद्ध आत्मा को केवलज्ञानी मानकर अनुभव करने पर तो दु:ख ही होता है।**

इसप्रकार आत्मा को संसार अवस्था में भी जो लोग केवलज्ञान रूप अनुभव करते हैं, वे जीव मिथ्यादृष्टि ही हैं।

इसीप्रकार रागादिभाव वर्तमान पर्याय में प्रत्यक्ष दिखाई देने पर भी जो लोग वर्तमान में स्वयं को उनसे रहित मानते हैं; वे भी निश्चयनय के कथन का सही भाव नहीं समझते।

ऐसे लोगों के लक्ष्य से पण्डितजी कहते हैं कि ऐसा मानने पर यह दोष होगा कि जब रागादिक भाव अपने हैं ही नहीं, अपन उनके कर्ता-भोक्ता हैं ही नहीं; तब उन्हें रागादिक होने का भय नहीं रहेगा, उन्हें मिटाने का उपाय करना भी नहीं रहेगा। ऐसी स्थिति में स्वच्छन्द होकर खोटे कर्मों का बंध करके अनन्त संसार में रुलने से उन्हें कौन बचा सकता है ?

इसप्रकार संसार अवस्था में रागादिक और मतिज्ञानादिक होते हुए भी स्वयं को उनसे रहित मानना और वीतरागता व केवलज्ञान वर्तमान पर्याय में नहीं होते हुए भी स्वयं को उनसे संयुक्त मानना अज्ञान ही है, मिथ्यात्व ही है।

ऐसी मान्यतावाले जैन गृहीतमिथ्यादृष्टि ही हैं।

निश्चयाभासी मिथ्यादृष्टि लोग निश्चयनय के कथनों का मर्म समझे बिना ही, प्रयोजन समझे बिना ही, अपेक्षा समझे बिना ही अनेक प्रत्यक्ष विरुद्ध बातें करते हैं, जो सामान्यजनों के भी गले नहीं उतरती और सम्पूर्णत: सही भी नहीं हैं।

वर्तमान में वीतरागता और केवलज्ञान नहीं है, फिर भी स्वयं को वीतरागी और केवलज्ञानी मानते हैं; मोह-राग-द्वेष हैं, फिर भी स्वयं को उनसे रहित मानते हैं; पर को जानना-देखना होता है, फिर भी यह कहते हैं कि आत्मा पर को जानता ही नहीं है।

यदि आपको केवलज्ञान है तो फिर आपको अलोकाकाश सहित लोकालोक के सभी पदार्थ उनकी तीन काल संबंधी सभी पर्यायों के साथ क्यों दिखाई नहीं देते; क्योंकि केवलज्ञान के विषय तो सभी द्रव्य और उनकी सम्पूर्ण पर्यायें हैं।[१]

यदि आप वीतरागी हैं तो फिर क्रोधादि करते क्यों देखे जाते हो ?

यदि आत्मा पर को नहीं जानता तो फिर आप हमें जानते हैं या नहीं, अपने माँ-बाप और बाल-बच्चों को जानते हो या नहीं ?

हम सबको जानते हुए भी, हम सबसे बातचीत करते हुए भी; आप यह कैसे कह सकते हो कि हम पर को नहीं जानते ? क्या हम सब आपसे पर नहीं हैं ?

तब वह कहता है कि ये सब बातें अध्यात्म शास्त्रों में लिखी हैं।

अरे, भाई ! ये सब परमशुद्धनिश्चयनय के कथन हैं। परमशुद्ध-

१. आचार्य उमास्वामी : सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य। तत्वार्थसूत्र, अ. १, सूत्र २९

निश्चयनय पर को, पर्यायों को और भेदविकल्पों को गौण करके केवल आत्मा के द्रव्यस्वभाव की बात करता है।

यद्यपि आत्मा सदा किसी न किसी पर्याय में रहता है। तात्पर्य यह है कि प्रतिसमय आत्मा में कोई न कोई पर्याय अवश्य होती है; क्योंकि द्रव्य के बिना पर्याय और पर्याय के बिना द्रव्य नहीं होता।

कहा भी है -

पर्याय बिन ना द्रव्य हो, ना द्रव्य बिन पर्याय ही।
दोनों अनन्य रहें सदा, यह बात श्रमणों ने कही।।[१]

तथापि निश्चयनय की दृष्टि से आत्मा न रागी है, न वीतरागी; न मतिज्ञानी है, न केवलज्ञानी; पर यह निश्चयाभासी आत्मा को रागी तो नहीं कहता, पर वीतरागी कहता है; मतिज्ञानी तो नहीं कहता, पर केवलज्ञानी कहता है।

यदि तुम पर्याय से रहित आत्मा की बात कर रहे हो तो रागी-वीतरागी, मतिज्ञान-केवलज्ञान सभी पर्यायों से रहित कहो; पर यह निश्चयाभासी राग-द्वेष पर्याय से तो रहित कहता है और वीतरागी पर्याय से सहित कहता है।

यद्यपि तुम इस समय बीमार हो, पर एक दृष्टि से डॉक्टर समझाता है कि इसी समय तुम अलग हो और बीमारी अलग है; क्योंकि बीमारी चली जायेगी और तुम कायम रहोगे। अत: चिन्ता की कोई बात नहीं है।

तुम बीमारी को गौण करके अपने स्वस्थ स्वभाव को देखो। बीमारी के चिन्तन से बीमारी बढती है और **बीमारी से भिन्न स्वस्थ स्वभाव के चिन्तन से बीमारी कम होती है।**

यद्यपि आत्मा वर्तमान में रागी-द्वेषी है; तथापि ये आस्रवतत्त्वरूप राग-द्वेष अलग हैं और आत्मा अलग है; क्योंकि ये चले जानेवाले हैं और आत्मा कायम है। अत: चिन्ता की कोई बात नहीं है।

तुम राग-द्वेषरूप आस्रवभावों को गौण करके अपने शुद्ध स्वभाव को देखो। रागादि के चिन्तन से रागादि नहीं जाते; आत्मस्वभाव के चिन्तन से, मनन से, उसमें अपनापन करने से, उसे निजरूप जानने से, उसमें उपयोग को स्थिर करने से; मोह-राग-द्वेष नष्ट होते हैं।

यही कारण है कि परमशुद्धनिश्चयनय से आत्मा के शुद्धस्वभाव का ज्ञान कराया जाता है।

यह नय अपने आत्मद्रव्य में रहनेवाली पर्यायों को गौण तो करता है; पर वे हैं ही नहीं - ऐसा नहीं कहता। वस्तुत: बात तो यह है कि यह नय पर्यायों के बारे में कुछ भी नहीं कहता; क्योंकि उनके बारे में कुछ कहने से वे गौण नहीं हो पाती, मुख्य ही हो जाती हैं तथा इस नय को भी उनकी गौणता ही अभीष्ट है, अभाव नहीं।

यद्यपि राग का अभाव हमें अभीष्ट है, पर पर्याय का अभाव अभीष्ट नहीं; क्योंकि पर्याय तो द्रव्य का अंश है और राग पर्याय की उपाधि है, विकार है, आस्रवभाव है, औपाधिकभाव है, दुखस्वरूप है और दु:खों का कारण है।

राग हेय है, त्यागने योग्य है, पर पर्याय हेय नहीं है, त्यागने योग्य भी नहीं है। फिर भी परमशुद्धनिश्चयनय के विषय में न पर्याय आती है, न राग - दोनों ही गौण रहते हैं। राग भी पर्याय में है, पर्याय है और वीतरागता भी पर्याय में है, पर्याय है; परन्तु राग हेय है और वीतरागता उपादेय है और पर्याय ज्ञेय है।

दूसरे की आत्मा में उत्पन्न राग-द्वेष और अपनी आत्मा में उत्पन्न राग-द्वेष - यद्यपि दोनों प्रकार के राग अपने आत्मा से भिन्न हैं; तथापि दोनों की भिन्नता में अन्तर है; क्योंकि दूसरे में उत्पन्न होनेवाले राग-द्वेष के निमित्त से हमें पुण्य-पाप कर्म का बंध नहीं होता; परन्तु स्वयं में उत्पन्न होनेवाले राग-द्वेष के निमित्त से कर्मबंध अवश्य होगा। इसलिए **पर के राग-द्वेष मात्र ज्ञेय हैं, पर स्वयं में उत्पन्न होनेवाले राग-द्वेष हेय हैं, छोड़ने योग्य हैं, नाश करने योग्य हैं।**

पर में उत्पन्न होनेवाले राग-द्वेष अपने से सर्वथा भिन्न हैं; पर अपने में उत्पन्न होनेवाले राग-द्वेष कथंचित् भिन्न हैं। यदि सर्वथा भिन्न होते तो उनके निमित्त से हमें कर्मबंध नहीं होता और यदि सर्वथा अभिन्न होते तो फिर उनसे कभी छुटकारा नहीं मिलता।

अपनी आत्मा में उत्पन्न होनेवाले राग-द्वेष अपने स्वभाव से तो वर्तमान में ही भिन्न हैं और पर्याय से भी निकल जानेवाले हैं। पर में होनेवाले राग-द्वेष न तो अपने स्वभाव में ही हैं और न पर्याय में; इसलिए वे सर्वथा भिन्न हैं।

निश्चयाभासी की भूल यह है कि वह वर्तमान में भी अपने में उनके अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता; इसकारण उनके अभाव करने के पुरुषार्थ से भी विरत हो जाता है, स्वच्छन्द हो जाता है।

राग-द्वेषादि भाव को सर्वथा आत्मा या आत्मा के अभिन्न अंग मानने पर भी एक आपत्ति आती है कि यदि वे सर्वथा अभिन्न हैं तो उनके नाश करने से आत्मा के नाश का प्रसंग उपस्थित होता है। इसलिए लोग आत्मा के नाश के भय से उनका नाश भी नहीं करना चाहेंगे।

इसप्रकार हम देखते हैं कि दोनों ही स्थितियाँ राग-द्वेष के नाश के पुरुषार्थ की प्रेरक नहीं हैं।

यदि डॉक्टर यह कह दे कि यह बीमारी तो तुम्हारे नाश के साथ ही नष्ट होगी, तो भी हम इलाज से विरत हो जाते हैं और यदि यह कह दें कि तुम्हें बीमारी है ही नहीं; तब भी हम इलाज से विरत हो जावेंगे। दोनों ही स्थितियों में परिणाम एक ही है, इलाज के पुरुषार्थ से विरक्ति।

यही कारण है कि डॉक्टर इसी सत्य का उद्घाटन करता है कि तुम बीमार तो हो, इलाज भी जरूरी है; पर चिन्ता की बात नहीं है, बीमारी चली जायेगी और तुम स्वस्थ हो जाओगे, कायम रहोगे; क्योंकि तुम और बीमारी जुदे-जुदे पदार्थ हैं। बीमारी जानेवाली और तुम कभी न जानेवाले तत्त्व हो। इसीप्रकार **आचार्य कहते हैं कि राग-द्वेष जानेवाले अशरण-अनित्य आस्रवतत्त्व हैं और तुम कभी न जानेवाले त्रिकाली ध्रुव नित्य पदार्थ हो, परम पदार्थ हो।** **(क्रमश:)**

१. आचार्य कुन्दकुन्द : पचांस्तिकाय संग्रह, गाथा १२ का हिन्दी पद्यानुवाद

02 जून 2010, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

फैडरेशन का राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ दिनाँक २६ मई को अ.भा.जैन युवा फैडरेशन का ३१वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न हुआ।

अधिवेशन की अध्यक्षता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुमनभाई दोशी एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री वज्रसेनजी दिल्ली मंचासीन थे।

इस अवसर पर तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री, ब्र. सुमतप्रकाशजी, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, ब्र.हेमचंदजी 'हेम', पण्डित बाबूभाई मेहता, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री आदि विद्वत्जन तथा पदाधिकारियों में श्री नरेशजी सिंघई नागपुर (महाराष्ट्र-विदर्भ प्रदेशाध्यक्ष), डॉ. उत्तमचंदजी भारिल्ल (राज. प्रदेशाध्यक्ष), पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री (राज. प्रदेश प्रभारी), श्री अरुणजी वर्धमान (म.प्र.प्रान्त उपाध्यक्ष)भी मंचासीन थे।

अधिवेशन में पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, श्री अरुणजी वर्धमान, श्री संदीपजी जैन भिण्ड, पण्डित अमोलजी सिंघई हिंगोली, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि महानुभावों के वक्तव्य का लाभ मिला।

अधिवेशन का संचालन महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने एवं मंगलाचरण पण्डित मनीषजी शास्त्री नागपुर ने किया।

फैडरेशन ने आगामी वर्ष को **श्रावकाचार संस्कार वर्ष** के रूप में मनाने का निर्णय लिया/घोषणा की। फैडरेशन द्वारा प्रतिवर्ष राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर पुरस्कारों की घोषणा की जाती है। इसी क्रम में **वर्षभर विशिष्ट कार्य हेतु श्रेष्ठ शाखा पुरस्कार** अ.भा.जैन युवा फैडरेशन शाखा अलवर, उदयपुर जिला एवं कोटा संभाग को प्राप्त हुआ।

वर्षभर श्रेष्ठ कार्य हेतु विशिष्ट कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी पुरस्कार पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित गौरवजी शास्त्री इन्दौर, श्री सुरेशचंदजी जैन भिण्ड, श्री पुष्पेन्द्रजी जैन भिण्ड एवं श्री नीरजजी जैन दिलशाद गार्डन दिल्ली को प्रदान किया गया।

विशिष्ट कार्य हेतु **श्रेष्ठ शाखा पुरस्कार** अ.भा.युवा फैडरेशन शाखा कोल्हापुर, नागपुर, अकोला, विश्वासनगर दिल्ली, न्यू उस्मानपुरा दिल्ली, छिन्दवाड़ा, बैंगलोर, मकरोनिया सागर, इन्दौर, जबलपुर, भोपाल, गौरझामर, जयपुर महानगर, खनियांधाना, बहादुरगढ, हिंगोली, ललितपुर, भिण्डर, लूणदा, खैरागढ, बीना, कोलारस एवं टीकमगढ शाखा को दिये गये।

हार्दिक आमंत्रण...

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा दिलशाद गार्डन दिल्ली द्वारा श्रुतपंचमी पर्व के अवसर पर दिनांक 12 से 20 जून, 2010 तक समयसार महामण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सम्पन्न होने जा रहा है। सभी साधर्मी बन्धुओं को भावभीना आमंत्रण है।

कार्यक्रम में सम्मिलित होने एवं उसकी विस्तृत जानकारी हेतु श्री नीरज जैन, महामंत्री 09311158655 से सम्पर्क किया जा सकता है।
कार्यक्रम स्थल – मुखर्जी स्कूल, पी एंड एन पॉकेट, दिलशाद गार्डन, दिल्ली।

स्नातक परिषद् का तृतीय अधिवेशन

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ दिनाँक २३ मई को श्री टोडरमल स्नातक परिषद् का तृतीय अधिवेशन संपन्न हुआ।

अधिवेशन के प्रथम सत्र की अध्यक्षता परिषद् के अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुमनभाई दोशी मुम्बई थे। विद्वत्वर्ग में तत्त्ववेत्ता डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, ब्र.यशपालजी जैन, ब्र.हेमचंदजी हेम, ब्र.अभिनन्दनजी शास्त्री, ब्र. सुमतप्रकाशजी, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित कोमलचंदजी टडा, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं श्री अखिलजी बंसल मंचासीन थे।

इस अवसर पर मंगलाचरण कुमारी परिणति पाटील ने किया। परिषद् के कार्यकारी अध्यक्ष पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने स्नातक परिषद् की स्थापना और कार्य की जानकारी दी।

इस अवसर पर ब्र.अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित संजयजी शास्त्री दौसा, पण्डित अध्यात्मजी शास्त्री कोलारस, पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री भरतपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री राउत, पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, कुमारी मुक्ति जैन मुम्बई ने अपने विचार व्यक्त किये।

अधिवेशन के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना ने की। इस सत्र में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित रमेशजी शास्त्री जयपुर, डॉ. महावीरजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित जितेन्द्रजी राठी, पण्डित अनेकांतजी भारिल्ल, पण्डित धरणेन्द्रजी सिंघल ग्वालियर, पण्डित प्रसन्नजी शेटे एवं कुमारी प्रतीति पाटील ने अपने विचार व्यक्त किये।

प्रकाशन तिथि : 28 मई 2010

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127